REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2019

हरियाणा की प्रमुख मिट्टीयाँ एवं वनस्पति – एक विश्लेषण

डॉ. दीपक कुमार
सहायक–आचार्य, भूगोल विभाग, अहीर कॉलेज, रेवाड़ी (हरि.)

परिचय :

हरियाणा प्रदेश भारत के उत्तरी–पश्चिमी भाग में $27^{0}39^{1}$ उतरी अक्षांश से $30^{0}55^{1}$ उत्तरी अक्षांश तथा $74^{0}28^{1}$ पूर्वी देशान्तर से $77^{0}36^{1}$ पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है। हरियाणा राज्य के पूर्व में यमुना नदी उत्तर प्रदेश व हरियाणा की सीमा निर्धारित करती हुई बहती है। हरियाणा के पश्चिम व दक्षिण में राजस्थान विस्तृत है। दक्षिण–पूर्व में केन्द्रशासित राज्य दिल्ली है जिसके तीन और हरियाणा पड़ता है। हरियाणा भारत का भू–आण्वेश्ति राज्य है। जिसका क्षेत्रफल 44212 वर्ग किमी0 है जो देश के कुल क्षेत्रफल का 1.34 प्रतिशत है। हरियाणा राज्य भारत का वह महत्वपूर्ण राज्य है जो न तो सागर तट को स्पर्श करता है और न ही किसी अन्तराष्ट्रीय सीमा को। हरियाणा राज्य का गठन सरदार हुकम सिंह के प्रयासो से पंजाब के पूर्नगठन के बाद 1 नवम्बर 1966 को हुआ था। हरियाणा राज्य बनने के बाद प्रथम जनगणना सन् 1971 में हुई थी इसके पश्चात प्रति दस वर्षों में जनगणना होती रही। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार हरियाणा की कुल जनसंख्या 25351462 है जो देश की कुल जनसंख्या का 2.09 प्रतिशत है। राज्य के पूर्नगठन के समय 7 जिले थे जिसमें अम्बाला, करनाल, रोहतक, गुरुग्राम, महेन्द्रगढ़, हिसार व जींद सम्मिलित थे। इसके पश्चात् समय–समय पर 12 नवीन जिलों का गठन किया गया जिसके फलस्वरुप जिलों की सीमाऐं बदलती रही व पूर्नगठित होती रही। 22 दिसम्बर 1972 को भिवानी व सोनीपत जिलों का गठन हुआ, 23 जनवरी 1973 को कुरुक्षेत्र अस्तीत्व में आया। 26 अगस्त 1975 को हिसार का उत्तरी पश्चिमी भाग अलग कर उसे सिरसा जिला बनाया गया। 2 अगस्त 1979 को गुरुग्राम का विभाजन कर फरीदाबाद जिले का गठन किया गया। 1 नवम्बर 1989 को हरियाणा दिवस के उपलक्ष्य में राज्य को चार जिले रेवाडी, कैथल, पानीपत व यमुनानगर उपहार स्वरुप मिले। 15 अगस्त 1995 को अम्बाला से पंचकुला व 15 अगस्त 1997 को हिसार से फतेहाबाद तथा रोहतक से झज्जर जिलों को पूर्नगठन किया गया इसी प्रकार 2 अक्टुबर 2004 को मेवात जिला बना, 15 अगस्त 2008 को पलवल व 18 सितम्बर 2016 को चरखी दादरी अस्तीतत्व में आया। वर्तमान में हरियाणा में 22 (बाईस) जिले हैं। चण्डीगढ पंजाब व हरियाणा की सांझी राजधानी होने के साथ–साथ केन्द्रशासित प्रदेश भी है।

मिट्टी :–

मृदा भू–पृष्ट पर अंसंगठित पदार्थ की एक परत है जिसका निर्माण चट्टानों तथा जैव पदार्थो के क्षय तथा विघटन कारकों द्वारा हुआ है।[11] मनुष्य के लिए मृदा प्रत्यक्ष व परोक्ष रुप से महत्वपूर्ण है। मिट्टी के महत्व का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि विश्व की अधिकांश प्राचीन सभ्यताएँ जलोढ़ मिट्टी के क्षेत्रों में ही विकसित हुई थी। महत्वपूर्ण बात यह है कि मिट्टी पर मानवीय उपयोग की अधिक छाप पड़ती है। चूंकि यह स्थिर संसाधन है परन्तु अनुचित व अत्यधिक उपयोग से इसकी गुणवता में गिरावट आती है और उससे

अनेक समस्याऐं जन्म लेती है। जोसेफ द्वारा दी गई परिभाषा काफी लोकप्रिय है उन्होनें लिखा कि मिट्टी, जीव, खनिज और कार्बनिक घटकों से बना प्राकृतिक पिंड है जो विभिन्न गहराई वाली परतों में विभिक्त होता है तथा नीचे के पदार्थो के आकारिकी, भौतिक बनावट, रासायनिक लक्षणों एवं जैविक गुणों की दृष्टि से भिन्न होती है। मिट्टी कृषि को प्रत्यक्ष रुप से प्रभावित करने वाला तत्व है मिट्टी ही फसलों का आधार होती है। हरियाणा एक कृषि प्रधान राज्य है हरियाणा में आर्थिक विकास की झलक मिट्टी की उर्वरता से ही स्पष्ट होती है यहाँ की समतल भूमि, उपजाऊ मिट्टी, सिंचाई व्यवस्था, मेहनती किसान आदि सब मिलकर राज्य के विकास में योगदान देते है।

हरियाणा की मिट्टीयों को उनकी स्थानिक अवस्थिति, उनकी मुख्य विशेषताओं एवं कृषि की उपयुक्ता के आधार पर निम्न भागों में बाँटा जा सकता है।

1. बहुत हल्की मिट्टी।
2. हल्की मिट्टी।
3. मध्यम मिट्टी।
4. सामान्यतः भारी मिट्टी।
5. अरावली की मिट्टीयाँ।
6. शिवालिक चट्टानी मिट्टीयाँ।
7. गिरीपदीय मिट्टीयाँ।

1. बहुत हल्की मिट्टी :–

यह मुख्यतः बलुई तथा बालुका युक्त दोमर मिट्टी है इसमें चूने के अंशों का बहूल्य रहता है इस मिट्टी का विस्तार मुख्य रुप से महेन्द्रगढ़, हिसार, भिवानी व सिरसा जिलों तक पाया जाता है। यह मिट्टी सामान्यतः शुष्क प्रदेश की है इसमें वनस्पति तत्वों का अभाव पाया जाता है। दक्षिण हरियाणा में महेन्द्रगढ़ जिले में बालु के टीलों की प्रधानता देखने को मिलती है। वायु अपरदन बड़े पैमाने पर होता है। इस प्रकार की मिट्टीयों में कई दोष पाऐ जाते हैं जिसमें पारगम्यता जल ग्रहण करने की कम क्षमता तथा शीघ्र सुखने की प्रकृति प्रमुख है इन त्रुटियों के कारण ही यहाँ पर फसलों को जल की कम मात्रा प्राप्त हो पाती है। सुखे की स्थिति में फसलों को अधिक क्षति पहुँचती है इस प्रकार की मिट्टी में हल चलाने में श्रम कम लगता है। भूमिगत जल खारा होने के कारण फसलों में उपयोगी नही है। इस मिट्टी में मोटे अनाजों और दालों की कृषि ही उपयोगी होती है। कृषि उत्पादन में वृद्धि करने के उद्देश्य से सरकार इस क्षेत्र में शुष्क भूमि कृषि पद्धति को बढ़ावा दे रही है।

2. हल्की मिट्टी :–

इस मिट्टी को बालु दोमट व दोमट मिट्टी में बाँटा गया है। इस मिट्टी की पट्टी बालुका मिट्टी तथा दोमट की पट्टियों के बीच स्थित है। यह मिट्टी मुख्य रुप से हिसार, रेवाड़ी, भिवानी, गुरुग्राम तथा झज्जर जिलों में पायी जाती है। स्थानीय भाषा में इसें ''रोसली'' मिट्टी भी कहते है। इसमें हल चलानें में कम श्रम लगता है। इस मिट्टी में जल धारण करने की शक्ति होती है इसलिए यह शुष्क व बरानी के लिए बहुत उपयुक्त है। इसमें सिल्ट व मृतिका की अपेक्षा बालु की मात्रा अधिक होती है जिस कारण इसमें जल को सम्भालनें की

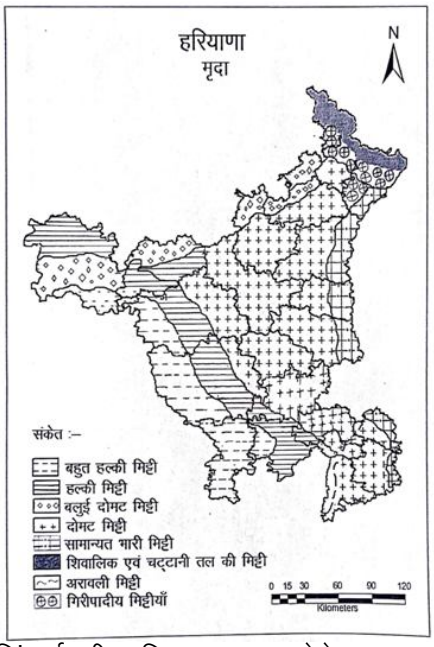

शक्ति भी अधिक होती है। सिंचाई की उचित व्यवस्था होने पर यह मिट्टी अच्छी फसल देती है। फुव्वांरा सिंचाई की उचित व्यवस्था होने पर यहाँ फसलें जल्दी अंकुरित होती है। बागवानी कृषि में 'टपका' सिंचाई विधि द्वारा अच्छी पैदावार ली जा सकती है।

3. मध्यम मिट्टियाँ :–

इस मिट्टी का विस्तार हरियाणा के पश्चिमी भाग में घग्गर नदी के उत्तर में सिरसा के कुछ गावों व डबवाली तहसील में है। भौगोलिक क्षेत्रों की भिन्नता के कारण इनकी भौतिक संरचना में अन्तर पाया जाता है। सिल्ट, बालु व मृतिका भौतिक संरचना के मुख्य घटक है। उपरोक्त मिट्टी में तीन भागों में बांट सकते हैं।

(क). स्थूल दोमट मिट्टी (मोटी) :– इस प्रकार की मिट्टी के कण मोटे होते है यह मुख्यतः गुड़गाँव, नूँह, फिरोजपुर झिरका तहसीलों में देखने को मिलती है।

(ख.) हल्की दोमट मिट्टी :– इस प्रकार की मिट्टी मुख्यतः गुरुग्राम, रेवाडी, नूँह आदि में पाई जाती है। इसमें बालु की प्रधानता होती है। नूँह तथा ताऊडू तहसीलों में यह मिट्टी अधिक उपजाऊ नहीं है।

(ग). दोमट मिट्टी :– यह गहरी, उपजाऊ मिट्टी है। यह हरियाणा के मध्यवर्ती भाग विशेष रुप से जींद, कैथल, सोनीपत, पानीपत, कुरुक्षेत्र, करनाल, गुरुग्राम व फरीदाबाद जिलों में पायी जाती है। यह मिट्टी गेंहूँ, चावल जैसे प्रमुख खाद्यान्न तथा गन्ना व कपास जैसी मुद्रा दायिनी फसलों के लिए उपयोगी है पर्याप्त वर्षा होने पर इस मिट्टी में अच्छी फसल होती है।

4. सामान्यतः भारी मिट्टीयाँ :–

इस वर्ग में सिल्ट युक्त दोमट मिट्टी सम्मिलित की जाती है। स्थानीय भाषा में इसे 'खादर' कहते है। यह मिट्टी यमुना नदी के साथ–साथ निम्न क्षेत्रों में नवीन खादर तथा उच्च क्षेत्रों में करनाल, पानीपत, कुरुक्षेत्र, सोनीपत, फरीदाबाद आदि जिलों के पूर्वी किनारों में यह मिट्टी पाई जाती है। नवीन खादर में प्रति वर्ष इस मिट्टी पर बाढ का पानी पहुंचता है ऊँचे भागों में पाई जाने वाली भारी मिट्टी को बांगर कहते है। सिल्ट की अधिकता के कारण यह मिट्टी गुढकामयी हो गई है। इस मिट्टी में चावल, गेहूँ, चना, जौ की कृषि की जाती है।

5. अरावली चट्टानी तल की मिट्टीयाँ :–

हरियाणा के दक्षिणी–पश्चिमी तथा दक्षिणी भाग में अरावली की उपस्थिति में पथरीली अथवा रेतीली मिट्टीयाँ पायी जाती है अरावली की पहाडियाँ सामन्यतः नीची व टूटी–फूटी है तथा ये मैदानी भागों में बिखरी हुई

है। इस क्षेत्र की सबसे ऊँची पहाडी कुलताजपुर गाँव में है जो महेन्द्रगढ़ की नारनौल तहसील के निकट है। इस क्षेत्र की पहाड़ी को ढोसी कहते है। जो 652 मीटर उँची है। हरियाणा के महेन्द्रगढ़, रेवाड़ी, गुडगाँव व फरीदाबाद जिलों में अरावली की पहाडियों के आस–पास यह पत्थरीला मैदानी क्षेत्र विस्तृत है। इस क्षेत्र की समुद्र तल की उँचाई 225 मीटर से 500 मीटर के आस–पास है। इस अर्ध–शुष्क क्षेत्र में यहाँ स्थित इन पहाडियों एवं वनस्पति विहीन नग्न व कठोर चट्टानों में वायु अपरदन होता है जिससे अपरदन के कारण गिरा हुआ शैल मलबा जमा हो जाता है। यहाँ कि मिट्टी कृषि के लिए उपजाऊ एवं उपयोगी नहीं है। मुसलाधार वर्षा तथा शुष्क ऋतु में वायु के तेज थपेडों से इस क्षेत्र में बड़े पैमाने पर अपरदन दिखाई देता है।

6. शिवालिक मिट्टीयाँ :–

ये मिट्टीयाँ पंचकुला के कालका व अम्बाला की नारायणगढ़ तहसीलों में पायी जाती है। इन मिट्टियों में भुराभुरा बलुआ पत्थर, बालु, चीका, बजरी आदि तत्वों की प्रधानता रहती है वहीं शिवालिक के गिरिपाद प्रदेश में बालु, बजरी आदि निम्न कोटि की पाई जाती है। कालका व नारायणगढ़ तहसीलों में इन्हें 'घर' तथा जगाधरी तहसील में 'कन्धी' कहते है। बरसाती नालों नें व्यापक स्तर पर इन मिट्टियों का अपरदन किया है।

7. गिरिपादीय मिट्टीयाँ :–

इस प्रकार की मिट्टीयाँ पंचकुला के कालका की नारायणगढ़ और यमुनानगर की जगाधरी तहसील में पाई जाती हैं। इनकी सामान्यतः उँचाई 300 से 375 मीटर है यहाँ पर बड़ी मात्रा में रेत, बजरी, कंकड़–पत्थर आदि देखने को मिलते है। यह शिवालिक श्रेणी के गिरिपाद में 25 किलोमीटर चोड़ी पट्टी है जो अन्य मैदानी भागों को अलग करती है।

वनस्पति :–

प्राकृतिक वनस्पति उन पेड़–पौधों को कहते है जो लम्बे समय तक बिना किसी बाहरी हस्तक्षेप के उगते हैं और उनकी विभिन्न प्रजातियाँ वहाँ पाई जाने वाली मिट्टी तथा जलवायविक परिस्थितियों में यथासम्भव स्वंय को ढाल लेती है।

किसी भी प्रदेश की प्राकृतिक वनस्पति वहाँ के धरातल, जलवायु, भू–गर्भिक संरचना, समुद्रतल से उँचाई और मिट्टी की दशाओं की देन होती है। प्राकृतिक वनस्पति जलवायु का परिणाम है। वनस्पति की दृष्टि से हरियाणा प्राचीनकाल में समृद्ध राज्य था यहाँ पर अनेक महत्वपूर्ण वन थे। कृरुक्षेत्र में ही काम्यक वन, आदिति वन, व्यास वन, फलकी वन, सूर्यावन, मधुवन और शीतवन स्थित थे जिन्हें पवित्र तीर्थस्थल माना जाता था लेकिन जैसे–जैसे कृषि एवं आवास क्षेत्रों का विस्तार हुआ वहाँ वनों का क्षेत्र कम होता चला गया।

सन् 1966 में अपने उदय के समय हरियाणा में 3.9 प्रतिशत वन क्षेत्र था जबकी आज यह लगभग 6.49 प्रतिशत है। राष्ट्रीय वन नीति के अनुसार प्रदेश के कुल भौगोलिक क्षेत्र के 20 प्रतिशत भाग पर वन होने चाहिए। वनों के आर्थिक महत्व के आधार पर निम्नलिखित भागों में विभिक्त किया है।

1. आरक्षित वन :–

राज्य में 249 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में आरक्षित वन है जो कुल वन क्षेत्र का 43.13 प्रतिशत है। भूमि कटान, बाढ रोकथाम, जलवायु एवं लकड़ी आपूर्ती आदि की दृष्टि से इन्हे सुरक्षित श्रेणी में रखा गया है। इस क्षेत्र में पशुचारण व लकड़ी काटना निषिद्ध है।

2. अवर्गीकृत वन :–

इन वनों का विस्तार 152 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में है जो कुल वनों का 16.85 प्रतिशत भाग को घेरे है। इस प्रकार के वनों में सरकार का कोई प्रतिबन्ध नहीं होता। लकड़ी काटने व पशुचारण की स्वतन्त्रता होती है। सरकार इसके लिए कुछ शुल्क प्राप्त करती है।

3. संरक्षित वन :–

हरियाणा राज्य के पुनर्गठन के पूर्व संरक्षित वनों का विस्तार 1158 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में था जो कुल वन क्षेत्र का 40.2 प्रतिशत है। हालांकी लकड़ी काटना व पशुचारण भी किया जाता है परन्तु वनों की पर्याप्त देख–रेख हो व क्षति न हो इस पर विशेष ध्यान दिया जाता है। भौगोलिक दृष्टि से हरियाणा में पाऐ जाने वाले वनों को दो भागों में बाटां जाता है।

1. उष्ण–कटिबन्धीय शुष्क कटीले वन :–

इस प्रकार के वन 20 से 40 से0मी0 वर्षा वाले क्षेत्रों में मिलते हैं। ये वन मैदानी क्षेत्र में फैले हुए हैं इसमें शीशम, नीम, सिरस, पीपल, कीकर, लसूडा, सेमल, आम, जामुन, पीलू, नीम, झरबेरी, कैर, खीप, ग्वारपाठा, थूहर, झींझा, सरकण्डा, बुई आदि उगते है। उपरोक्त वन यमुनानगर, हिसार, कैथल, रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, करनाल, हिसार, आदि में मिलते है।

2. उपोष्ण–कटिबन्धीय पाइन वन :–

ये वन उन क्षेत्रों में उगते है जहाँ 100 से.मी. के आस–पास वर्षा होती है। ये वन मुख्य रुप से अम्बाला, पंचकुला, यमुनानगर व हिमाचल प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों के पास मिलते है इन वनों में चीड पाइन, कचनार, सिरस, जिंगन, अमलतास, महुआ, हरड़–भरेड़ा, जामुन, बियुल आदि शामिल है। राज्य सरकार ने सड़कों नहरों व रेलमार्गो के किनारों पर वृक्षारोपण की पेटियाँ बनवाई हैं ताकि वनों को सुरक्षित रखा जा सके।

हरियाणा राज्य में वनों को बचाने व सुरक्षित करने के लिए एक राज्य वन नीति भी बनाई है। जिसके निम्न लक्ष्य है –

1. पर्यावरण स्थायित्व एवं पारिस्थितिकी सन्तुलन कायम रखने हेतु वृक्षारोपण।
2. वनों में जल संसाधनों का संरक्षण एवं विकास।
3. वर्षा के अपक्षयन को रोकना।
4. नदी एवं जल संग्रहण क्षेत्रों में मृदा अपरदन को रोकना।
5. लवणता प्रभावित क्षेत्रों का पूर्नरुद्वार करना।
6. ईको–टूरिज्म का विकास करना।
7. बंजर भूमि में वृक्षारोपण एवं सामाजिक वानिकी कार्यक्रम द्वारा वृक्षाच्छादित क्षेत्रों में वृद्धि करना।
8. पर्यावरण शिक्षा एवं चेतना के उद्देश्य से सभी जिला उपायुक्तों की अध्यक्षता में गठित जिला पर्यावरण कमेटियों का पूर्नगठन करना।
9. पोलिथिन के थैलों के प्रयोग को वर्जित करना व कुड़े–कचरे को इधर–उधर फेंकना कानुन अपराध मानना।
10. वनोत्पादन की समुचित उपयोगिता एवं अन्य विकल्पों को प्रोत्साहित करना।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1. कुल श्रेष्ठ के.पी. (1981) जय भूगोल किताब घर कानपुर।
2. कुमार प्रमीला, शर्मा श्रीकमल (2000) कृषि भूगोल, मध्यप्रदेश, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल।
3. हरियाणा एक अध्ययन (2004) प्रतियोगिता साहित्य सीरिज।
4. खुल्लर डी.आर. (2002) भारत का भूगोल एवं प्रयोगात्मक भूगोल, सरस्वती हाऊस (प्रा.लि.) दिल्ली।
5. खुल्लर डी.आर. (2002) भारत का भूगोल एवं मानव भूगोल, सरस्वती हाऊस (प्रा.लि.) दिल्ली।

डॉ. दीपक कुमार
सहायक–आचार्य, भूगोल विभाग, अहीर कॉलेज, रेवाड़ी (हरि0)